ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

नगरीकरण एवं संयुक्त परिवार
Urban and Whole Family

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11//2021

शर्मिला कुमारी
शोध निदेशक,
समाजशास्त्र विभाग,
कैरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान,भारत

मीना सहगल
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग,
कैरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान,भारत

सारांश

नगरीकरण की प्रवृत्ति के साथ सयुंक्त परिवार के स्वरूप में परिवर्तन आया हैं, समय के साथ सयुंक्त परिवारों का विघटन एकल परिवार में हो रहा हैं। परिवार के आदर्शो और नैतिक्ता में इतनी तीव्रता से परिवर्तन हो रहा हैं कि कभी-कभी इनके भविष्य के बारे में कोई निश्कर्श देना कठिन हो जाता हैं। यद्यपि आधुनिक परिवर्तनो के फलस्वरूप हमने अनेक कुप्रथाओं और रूढियों से मुक्ति पाली हैं। लेकिन इन सबके साथ ही परिवार अपनी मौलिकता को खो रहे हैं, परिवार का अर्थ सिमट गया हैं। पहले परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, मम्मी-पापा और बच्चे आते थे। लेकिन अब परिवार सिमट कर मम्मी-पापा और बच्चो में रह गया हैं। फान्सन के अनुसार दो बच्चो वाला परिवार की आज समाज का प्रचलित मापदण्डबन चुका हैं।

With the trend of urbanization, there has been a change in the nature of the joint family, with the passage of time joint families are getting into nuclear family. The ideals and morals of the family are changing so rapidly that sometimes it is difficult to make any conclusions about their future. However, as a result of modern changes, we have got rid of many evil practices and customs. But at the same time, the family is losing its originality, the meaning of the family has been reduced. In the first family, grandparents, uncles and aunts, aunts and uncles, parents and children used to come. But now the family is reduced to a mother, father and children. According to Phanson, a family with two children has become the prevailing standard of society today.

मुख्यशब्द: परिप्रेक्ष्य - संदर्भ, गोश्ठियों - चैपाल, प्रजातांत्रिक - लोकतंत्र, कुप्रथा - कुरीति, उन्मुख - तत्पर।

Keywords: Perspective - Context, Seminars - Chapel, Democratic - Democracy, Malpractice - evil, Oriented - ready.

प्रस्तावना

पहले परिवार के मुखिया का आदेश ही सर्वोपरि था और परिवार के सदस्यों को उनके अनुसार कार्य करना पडता था लेकिन वर्तमान में व्यक्तिगत् योग्यता को परिवार में महत्व दिया जाने लगता हैं। इस प्रकार परिवार आधिनामक वादा की सीमा से बाहर निकलकर प्रजातान्त्रिक आदर्शो की और उन्मुख हो रहे हैं। स्त्रियों में सामाजिक चेतना बढ़ रही हैं और महिलाऐं भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही हैं। समाज में उनके मान-सम्मान में वृद्धि हुई हैं, परिवार में स्त्री की स्थिति सहयोगी तथा मिश्र की हैं, सेविका की नहीं।

परिवार के महत्वपूर्ण कार्यो के कारण परिवार को सामाजिक नियन्त्रण का मौलिक प्रतिनिधी माना जा रहा था। आज इन्ही कार्यो में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न होने लग गये हैं। मौलिक रूप से एकल परिवार भी अनेक परम्परागत् कार्य करते हैं। लैकिन अन कार्यो को करने के तरीको और इनसे सम्बन्धित भावनाओं में परिवर्तन हुआ हैं। परिवार और व्यक्ति दो प्रथम इकाई बन गये हैं। शिक्षा के प्रभाव में रूढियों के स्थान पर वार्क में वृद्धि हो रही हैं। तर्क का महत्व बढने से परम्परागत् धार्मिक कार्य कम हो रहे हैं। धार्मिक उत्सवों का महत्व भी कम हो रहा हैं। धार्मिक भोज का स्थान चाय, पार्टियों और मिश्र गोष्ठियों ने ले लिया हैं। सदरलैण्ड और वुडवर्थ के अनुसार आर्थिक उत्पादन का दायित्व भले ही परिवार से दूसरी संस्थाओं को जाये लेकिन उपयोग एक इकाई के रूप में परिवार का महत्व सदा बना रहेगा।

उपकल्पना

भारतीय परिवार संस्था ने व्यक्ति को जैसी स्थिरता एवं सुरक्षा प्रदान की हैं वह सम्भवत् अन्य समाजो में बहुत कम देखने को मिल रही हैं। व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के प्रसार, विवाह और परिवार से सम्बन्धित नवीन मूल्यों और आधुनिक जीवन की बढ़ती हुई जटीलताओं ने भी परम्परागत् सयुंक्त परिवार के समक्ष अनेक समस्याऐं उत्पन्न कर दी हैं। बदलते समय तथा बदलती दुनिया के परिवर्तनों तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यक्ति को निरन्तर नयी परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालना पडता हैं। परिवर्तन को बिना जिन्दगी गतिहीन हैं।

रधुवीर सिन्हा (1975) के अनुसार आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नगरीकरण औधागिकीकरण और आधुनिकता ने सयुंक्त परिवार व्यवस्था को नुकसान पहूँचाया हैं। भारत की संयुक्त परिवार व्यवस्था कई कारणो से बाधित हुई हैं। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय तथा उदावाद के प्रसार ने सयुंक्त परिवार को भावनाओं के समक्ष चुनौति पेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर रहने के बजाय

अधिक बाजारोन्मुख होती जा रही थी तथा नगरो का उदय हो रहा था। संयुक्त परिवार से संयुक्त उर्जा का जन्म होता हैं और संयुक्त उर्जा दुखो को खत्म करती हैं। जो घर संयुक्त परिवार का पोषक नहीं हैं। उसकी शांति और समृद्धि सिर्फ भम्र मात्र हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य
1. नगरो मे रहने वाले संयुक्त परिवारो की जीवन शैली को समझना।
2. नगरो मे रहने वाले संयुक्त परिवारो में महिलाओ ं की स्थिति को जानना।
3. बच्चों की मनःस्थिति को समझना।
4. परिवार मे रहने वाले सदस्यों के आपसी व्यवहार को जानना।
5. नगरीकरण की आवश्यकता पर विचार करना व उसकी आवश्यकता का अवलोकन करना।
6. नगरीकरण की संस्कृति सभ्यता की जानकारी प्राप्त करना।
7. नगरीय जीवन व ग्रामीण जीवन मे अन्तर को समझना।
8. नगरीय क्षैत्रो में जनसंख्या वृद्धि से होने वाले परिणाम की जानकारी प्राप्त करना।

निष्कर्ष

इस सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट होता हैं कि परिवार का आकार स्वरूप चाहै कैसा भी हो परिवार अपनी रचनात्मक शिक्षको के द्वारा एक सामाजिक व्यक्तिगत् का निर्माण करते हैं और इस प्रकार सामाजिक जीवन को संगठीत बनाते हैं। वास्तव में परिवार के सदस्यों की संख्या परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित होती हैं। इस प्रकार संयुक्त परिवार का छोटे परिवारों में परिवर्तन होना समय के अनुकुल और एक स्वभाविक घटना हैं। विघटन का सकेंत नहीं और यह सब किसी समय विशेश की आवश्यकता के अनुसार निर्धारित होता हैं, परिवार सत्तावादी ना होकर लोकतांत्रिक परिवार पसंद करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आई.पी.देसाई 'रूरल सोसियालॉजी इन इण्डिया, पृ0स0-38*
2. *मैक्स वेबर "थियोरी ऑफ सोसल एण्ड इकोनोमिक आर्गनाईजेशन।*
3. *सदरलैण्ड ओर वुडवर्थ।*
4. *फान्सन*
5. *रघुवीर सिन्हा (1975)*
6. *के.एम. कापडिया (19*